शिवरात्रि – परमात्मा शिव के दिव्य अवतरण और दिव्य कर्म का यादगार पर्व

काल चक्र अविरल गति से घूमता है। भूतकाल की घटनाओं की केवल स्मृति ही रह जाती है। उसी स्मृति को पुनः ताज़ा करने के लिये यादगारें बनाई जाती हैं, कथाएं लिखी जाती हैं एवं जन्म-दिवस मनाए जाते हैं जिनमें श्रद्धा, प्रेम, स्नेह, सद्भावना का पुट होता है। परन्तु एक वह दिन भी आ जाता है जबकि श्रद्धा और स्नेह का अन्त हो जाता है और रह जाती है केवल परम्परा। यह कहना अतिशयोक्ति न होगी कि आज पर्व भी उसी परम्परा को निभाने मात्र मनाए जाते हैं भारतवर्ष अध्यात्म प्रधान देश है और जितने पर्व भारत में मनाए जाते हैं शायद ही उतने पर्व अन्य किसी देश में मनाए जाते हों। समय-प्रति-समय ये त्योहार उन्हीं छिपी हुई आध्यात्मिकता की रश्मियों को जागृत करते हैं। शिवरात्रि भी उन विशिष्ट पर्वों में मुख्य स्थान रखता है। महाशिवरात्रि का नाम जैसा महान् है वैसे ही यह महानतम् पर्व समस्त संसार की आत्माओं को परमपिता परमात्मा शिव की स्मृति दिलाता है। भारतवर्ष में भगवान शिव के लाखों मंदिर पाए जाते हैं और शायद ही कोई ऐसा मन्दिर हो जहां शिवलिंग की प्रतिमा न हो। शायद ही कोई ऐसा धर्मग्रन्थ हो जिसमें शिव का गायन न हो। परन्तु विडम्बना यह है कि फिर भी शिव के परिचय से सर्व मनुष्यात्माएं अपरिचित हैं। भारत के कोने-कोने में निराकार ज्योतिबिन्दु शिव परमात्मा की आराधना भिन्न-भिन्न नामों से की जाती है। उदाहरणार्थ अमरनाथ, विश्वनाथ, सोमनाथ, बबूलनाथ, पशुपतिनाथ इत्यादि भगवान शिव के ही तो मंदिर हैं। वास्तव में श्रीकृष्ण एवं मर्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्र जी के इष्ट परमात्मा शिव ही हैं। गोपेश्वर एवं रामेश्वर जैसे विशाल शिव के मंदिर आज दिन तक इसके साक्षी हैं। भारत से बाहर, विश्वपिता शिव का मक्का में संग-ए-असवद, मिश्र में ``ओसिरिस`` की अराधना, बेबोलोन में ``शिअन`` नाम से पूजा व सम्मान इसी बात का द्योतक है। स्पष्ट है कि परमपिता परमात्मा शिव ने अवश्य कोई महान् कर्त्तव्य किया होगा।

शिवरात्रि क्यों मनाते हैं?

शिवरात्रि निराकार परमपिता परमात्मा शिव के दिव्य अलौकिक जन्म का स्मरण दिवस है। हम इस संसार में किसी का भी जन्मोत्सव मनाते हैं तो उसे जन्मदिवस कहते हैं भले ही वह रात्रि में पैदा हुआ हो, मानव जन्मोत्सव को जन्म-रात्रि नहीं वरन् जन्म-दिवस के रूप में मनाते हैं परन्तु शिव के जन्म-दिवस को शिवरात्रि ही कहते हैं। वास्तव में यहाँ शिव के साथ जुड़ी हुई रात्रि स्थूल अंधकार का वाचक नहीं है। यह आध्यात्मिक दृष्टिकोण से कल्प के अन्त के समय व्याप्त घोर अज्ञानता और तमोप्रधानता का प्रतीक है। जब सृष्टि पर अज्ञान अंधकार छाया होता है। काम, क्रोध आदि विकारों के वशीभूत मानव दुःखी व अशांत हो जाता है; धर्म, अधर्म का रूप ले लेता है, भ्रष्टाचार का चारों ओर बोलबाला होता है तब ज्ञान सूर्य परमात्मा शिव अज्ञानता रूपी अंधकार का विनाश करने के लिये प्रकट होते हैं। विकारी, अपवित्र दुनिया को निर्विकारी, पावन दुनिया बनाना तथा कलियुग, दुःखधाम के बदले सतयुग, सुखधाम की स्थापना करना सर्वसमर्थ परमपिता परमात्मा शिव का ही कार्य है। परमात्मा अजन्मा है अर्थात् अन्य आत्माओं के सदृश्य माता के गर्भ से जन्म नहीं लेते हैं। वे परकाया प्रवेश करते हैं अर्थात् "स्वयंभू" परमात्मा शिव प्रकृति को वश में करके साधारण वृद्ध तन का आधार लेते हैं और उस तन का नाम रखते हैं "प्रजापिता ब्रह्मा"। वे ब्रह्मा के साकार माध्यम से रूद्र-ज्ञान-यज्ञ रचते हैं जिसमें पूरी आसुरी दुनिया स्वाहा हो जाती है।

शिवरात्रि का आध्यात्मिक रहस्य –

परमपिता परमात्मा शिव बिन्दु रूप हैं इसलिये भक्त-जन शिवलिंग की अराधना करते हैं, उस पर दूध मिश्रित लस्सी, बेल-पत्ते और अक के फूल चढ़ाते हैं। अक के फूल एवं धतूरा चढ़ाने का रहस्य यह है कि अपने विकारों को उन्हें देकर निर्विकारी बन पवित्रता के व्रत का पालन करें। परमपिता परमात्मा शिव संसार की समस्त आत्माओं को पवित्र बनाकर उनके पथ प्रदर्शक बनकर परमधाम वापिस ले जाते हैं, इसलिए उन्हें आशुतोष व भोलानाथ भी कहते हैं। ब्रह्मचर्य व्रत सच्चा उपवास है क्योंकि इसके पालन से मनुष्यात्मा को परमात्मा का सामीप्य प्राप्त होता है। इसी प्रकार एक रात जागरण करने से अविनाशी प्राप्ति नहीं होती परन्तु अब तो कलियुग रूपी महाशिवरात्रि चल रही है उसमें आत्मा को ज्ञान द्वारा जागृत करना ही सच्चा जागरण है। इस आध्यात्मिक जागरण द्वारा ही मुक्तिजीवनमुक्ति मिलती है।

शिव सर्व आत्माओं के परमपिता हैं –

परमपिता परमात्मा शिव का यही परिचय यदि सर्व मनुष्यात्माओं को दिया जाये तो सभी सम्प्रदायों को एक सूत्र में बांधा जा सकता है। क्योंकि परमात्मा शिव का स्मृतिचिन्ह शिवलिंग के रूप में सर्वत्र सर्व धर्मावलम्बियों द्वारा मान्य है। यद्यपि मुसलमान भाई मूर्तिपूजा नहीं करते हैं तथापि वे मक्का में संग-ए-असवद नामक पत्थर को आदर से चूमते हैं। क्योंकि उनका यह दृढ़ विश्वास है कि यह भगवान का भेजा हुआ है। अतः यदि उन्हें यह मालूम पड़ जाए कि खुदा अथवा भगवान शिव एक ही हैं तो दोनों धर्मों से भावनात्मक एकता हो सकती है। इसी प्रकार ओल्ड टेस्टामेन्ट में मूसा ने जेहोवा का वर्णन किया है। वह ज्योतिर्बिन्दु परमात्मा का ही यादगार है। इस प्रकार विभिन्न धर्मों के बीच मैत्री भावना स्थापित हो सकती है। रामेश्वरम् में राम के ईश्वर शिव, वृंदावन में श्रीकृष्ण के इष्ट गोपेश्वर तथा एलीफेण्टा में त्रिमूर्ति शिव के चित्रों से स्पष्ट है कि सर्वात्माओं के आराध्य परमपिता परमात्मा शिव ही हैं। शिवरात्रि का त्योहार सभी धर्मों का त्योहार है तथा सभी धर्म वालों के लिये भारतवर्ष तीर्थ है। यदि इस प्रकार का परिचय दिया जाता है तो विश्व का इतिहास ही कुछ और होता तथा साम्प्रदायिक दंगे, धार्मिक मतभेद, रंगभेद, जातिभेद इत्यादि नहीं होते। चहुं ओर भ्रातृत्व की भावना होती। आज पुनः वही घड़ी है, वही दशा है, वही रात्रि है जब मानव समाज पतन की चरम सीमा तक पहुंच चुका है। ऐसे समय में कल्प की महानतम घटना तथा दिव्य संदेश सुनाते हुए हमें अति हर्ष हो रहा है कि कलियुग के अंत और सतयुग के आदि के इस संगमयुग पर ज्ञान-सागर, प्रेम व करुणा के सागर, पतित-पावन, स्वयंभू परमात्मा शिव हम मनुष्यात्माओं की बुझी हुई ज्योति जगाने हेतु अवतरित हो चुके हैं। वे साकार प्रजापिता ब्रह्मा के माध्यम द्वारा सहज ज्ञान व सहज राजयोग की शिक्षा देकर विकारों के बंधन से मुक्त कर निर्विकारी पावन देव पद की प्राप्ति कराकर दैवी स्वराज्य की पुनः स्थापना करा रहे हैं। इसलिये प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय समूचे विश्व के 130 देशों में अपने 10000 से भी अधिक सेवाकेन्द्रों के माध्यम से 74वीं महाशिवरात्रि का पावन पर्व बहुत धूमधाम से मना रहा है। आइये हम सभी इसमें शामिल हों, निर्विकारी बनने की प्रतिज्ञा करें।

शिव का एक विराट स्वरूप

भारतवासी हर वर्ष शिवरात्रि मनाते हैं किन्तु इस सत्यता को सभी भूल चुके हैं कि यह भारत का

सबसे बड़ा त्योहार है। शिवरात्रि के वास्तविक महत्त्व को समझकर इसे सार्थक रूप में मनाने के लिए यह जानना आवश्यक है कि शिव कौन हैं और रात्रि के साथ इनका क्या सम्बन्ध है ? शिव नाम परमात्मा का है। शिव का अर्थ है कल्याणकारी। शिव को बिन्दु भी कहते हैं। परमात्मा इस कल्प वृक्ष का वृक्षपति है, निमित्त करण है। परमात्मा ही सब सुखों का अक्षय भण्डार है, विश्व कल्याणकारी एवम् सर्व का गति-सदगति दाता है। अतः शिव, परमात्मा का ही पर्यायवाची नाम है। भारत में शिव की प्रतिमा शिवलिंग अनेक मन्दिरों में है। इनमें मुख्य अमरनाथ, सोमनाथ, विश्वेश्वर, पापकटेश्वर, मुक्तेश्वर, महाकालेश्वर इत्यादि नाम प्रसिद्ध हैं। ये परमात्मा के सभी नाम किसी-न-किसी गुण अथवा दिव्य कर्त्तव्य के सूचक हैं। दक्षिण में रामेश्वर, वृन्दावन में गोपेश्वर के मन्दिर भी प्रमाणित करते हैं कि शिव ही श्रीराम व श्रीकृष्ण के परम पूज्य परमात्मा हैं।

शिवलिंग परमात्मा की प्रतिमा है –

परमात्मा ज्योति स्वरूप है इसलिये साकारी एवं आकारी देवताओं की भेंट में उन्हें निराकार कहा जाता है। परमात्मा के ज्योति बिन्दु स्वरूप का साक्षात्कार केवल दिव्य दृष्टि के द्वारा ही हो सकता है। शिवलिंग का कोई शारीरिक रूप नहीं है क्योंकि यह परमात्मा का ही स्मरण चिन्ह है। परमात्मा भी निराकार ज्योतिस्वरूप है। आज बहुत से लोग लिंग शब्द का अर्थ न जाने के कारण लिंग के बारे में अश्लील कल्पना करते हैं। वास्तव में, परमात्मा शिव के ज्योति स्वरूप होने के कारण ही उनकी प्रतिमा को ज्योतिर्लिंग अथवा शिवलिंग कहा जाता है।

शिव की मान्यता विश्व व्यापी है –

अन्य धर्मों के लोग भी परमात्मा शिव की इस प्रतिमा को अपनी-अपनी रीति के अनुसार मान्यता देते हैं। मक्का में यह स्मरण चिन्ह "संग-ए-असवद" नाम से विख्यात है। जापान के बहुत से बौद्ध धर्मावलम्बी आज भी शिवलिंग के आकार के पत्थर को सामने रखकर ध्यान लगाते हैं। ईसा ने परमात्मा को 9दिव्य ज्योति" कहा है। इटली तथा फ्रांस के गिरजा घरों में अभी तक शिवलिंग की प्रतिमा रखी है। रोम में शिवलिंग को प्रियपस कहते हैं। शंकराचार्य ने भी शिवलिंग के मठ स्थापित किये। गुरु नानक ने भी परमात्मा को ओंकार कहा है जबकि ज्योतिस्वरूप शिव परमात्मा के एक प्रसिद्ध मन्दिर का नाम भी ओंकारेश्वर है। गुरु गोविन्द सिंह जी के "दे शिवा वर मोहे" शब्द भी उनके परमात्मा शिव से वरदान मांगने की याद दिलाते हैं। इससे स्पष्ट है कि परमात्मा शिव एक धर्म के पूज्य नहीं बल्कि विश्व की सभी आत्माओं के परमपूज्य परमपिता हैं।

परमात्मा शिव के दिव्य कर्त्तव्य –

शिवलिंग पर जो त्रिपुण्ड बनी होती है अथवा जो तीन पत्ते चढ़ाये जाते हैं वह परमात्मा के मुख्य तीन गुणों अथवा कर्तव्यों को सिद्ध करते हैं कि शिव त्रिमूर्ति, त्रिकालदर्शी अथवा त्रिलोकनाथ है। त्रिमूर्ति का अर्थ यह है कि ज्योतिबिन्दु परमात्मा शिव, ब्रह्मा, विष्णु, शंकर के रचयिता हैं तथा इनके द्वारा क्रमशः नई सतयुगी सृष्टि की स्थापना, पालना एवं कलयुगी दुनियां का विनाश कराने वाले करन करावनहार स्वामी हैं।

शिवरात्रि का आध्यात्मिक रहस्य –

शिवरात्रि फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को अमावस्या से एक दिन पहले मनायी जाती है। फाल्गुन मास वर्ष के अन्त का द्योतक होता है व उसकी चतुर्दशी रात्रि घोर अन्धकार की निशानी है। इस दिन शिवरात्रि मनाने का आध्यात्मिक रहस्य यह है कि परमात्मा शिव कल्पान्त के घोर अज्ञान रूपी रात्रि के समय, पुरानी सृष्टि के विनाश से कुछ समय पूर्व अवतरित होक। तमोप्रधानता एवं पापाचार का विनाश करके दुःख-अशान्ति को समूल नष्ट करते हैं। ज्योति बिन्दु गंगाधर परमात्मा शिव कलियुग के अन्त व सतयुग की आदि के सन्धिकाल अथवा संगम के समय ब्रह्मा के तन अथवा भाग्यशाली शरीर रूपी रथ में प्रवेश करके ईश्वरीय ज्ञान देते हैं। वास्तव में यही सच्चा गीता ज्ञान है। इसे शरीरधारी देवता श्री कृष्ण ने नहीं बल्कि गोपेश्वर अव्यक्त मूर्त परमात्मा शिव ने ब्रह्मा द्वारा सुनाया था। ब्रह्मा द्वारा जो मातायें व कन्यायें "सुधाकर" परमात्मा शिव से ज्ञान सुधा का अमृत पान करती हैं वही शिव शक्तियां होती हैं। ये चैतन्य मातायें ही भारत के जन-मन को शिव द्वारा प्राप्त ज्ञान से पावन करती हैं। इस कारण से शिवरात्रि भारत का सबसे बड़ा त्योहार है।

शिवरात्रि का ईश्वरीय सन्देश –

अब परमात्मा शिव आदेश देते हैं -मेरे प्रिय भक्तो, आप जन्म-जन्मान्तर से बिना यथार्थ पहचान के मेरी जड़ प्रतिमा की पूजा, जागरण तथा उपवास करके शिवरात्रि मानते आये हो। अब अपने इस अन्तिम जन्म में महाविनाश से पूर्व मेरे ज्ञान द्वारा अज्ञान निद्रा से जागरण कर मेरे साथ मनमनाभव अर्थात् योग युक्त होकर विकारों का सच्चा उपवास करो। इस ज्ञान एवम् योग बल से महाविनाश तक ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करो। यही सच्चा महाव्रत अथवा शिवव्रत है।

74वीं शिव जयन्ती –

अब अति धर्म ग्लानि का समय पुनः आ चुका है और पवित्र पावन परमात्मा शिव ब्रह्मा के साकार तन में प्रवेश करके अपना कल्प (5000 वर्ष) पूर्व वाला रूद्र-गीता–ज्ञान सुना रहे हैं। इस शिवरात्रि को हम उनके दिव्य अवतरण की 74वीं जयन्ती मना रहे हैं। सभी मनुष्यात्माओं को सादर ईश्वरीय निमन्त्रण है कि शिवरात्रि के यथार्थ आध्यात्मिक रहस्य को जानकर शीघ्र ही आने वाली सतयुगी नई दुनिया में देवपद को प्राप्त करें।

। ओम् शान्ति।

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स
www.bkvarta.com